मंगोलायड
(4) भूमध्यसागरीय (i) पुरा-भूमध्यसागरीय (ii) भूमध्यसागरीय
(iii) प्राच्य
(5) ब्रैकिसिफेलस (विशाल सिर वाले पश्चिमी लोग) (i) अल्पाइन
(ii) अल्पीनायड (iii) डिनॉरिक
(6) नॉर्डिक
भारत में पाए जाने वाले नीग्रिटो, प्रोटोऑस्टोलायड व मंगोलायड प्रजातियों के लोग आदिवासी जनजातियों के अंतर्गत आते हैं।
1. नीग्रिटो - अंडमान-निकोबार एवं त्रावनकोर व कोचीन की पहाड़ियों में पाई जाती हैं।
2. प्रोटो ऑस्ट्रेलायड - ये मध्य एवं द. भारत की कबीलाई जनजातियों की प्रजातियाँ हैं।
3. मंगोलायड - (क) पुरा-मंगोलायड (i) लंबे सिर वाले (ii) चौड़े सिर वाले (असम और हिमालय क्षेत्र)
(ख) तिब्बती-मंगोलायड - लेह, लद्दाख
विकसित प्रजातियों के अंतर्गत पुरा-भूमध्यसागरीय, भूमध्यसागरीय, प्राच्य, नॉर्डिक एवं प. लघु कपालिक लोग आते हैं।
1. पुरा-भूमध्यसागरीय-द. भारत एवं उत्तर भारत की निम्न जातियाँ दीर्घ कापालिक होते हैं।
2. भूमध्यसागरीय - उत्तर भारत की उच्च जातियाँ।
3. प्राच्य - पंजाब, राजस्थान, सिंध, गुजरात, महाराष्ट्र आदि के लोग।
4. प. लघु कापालिक - दक्षिणी बलुचिस्तान, सिंध, गुजरात, महाराष्ट्र में पाए जाते हैं।
5. नार्डिक - उत्तर पश्चिम भारत के लोग।
भारत में आने वाला सबसे पहला प्रजाति समूह नीग्रो था। उसके पश्चात क्रमशः प्रोटो-ऑस्ट्रेलायड एवं भूमध्यसागरीय प्रजातियों का आगमन हुआ। इन्हीं दोनों प्रजातियों ने मिलकर हड़प्पा सभ्यता की शुरुआत की। नार्डिक प्रजाति भारत में सबसे अंत में आई। ये सभी प्रजातियाँ अपने प्रजातीय गुणों के आधार पर एक दूसरे से अलग होते हैं। इन प्रजातीय गुणों में बालों का रंग व स्वरूप, कपाल संरचना, नासिका सूचकांक, आँखों का रंग व आकार शारीरिक ढांचा, त्वचा का रंग, रक्त समूह आदि आते हैं। परंतु भारत में प्रजातियों का अत्यधिक मिश्रण हुआ है एवं एक प्रकार से यहाँ भारतीय प्रजाति का विकास हो गया है, यद्यपि प्रजातीय गुण कुछ हद तक इनकी विशेषताओं को प्रकट करते हैं।

भारत की प्रमुख जनजातियाँ

चंदा समिति ने 1960 ई. में आदिम या अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत किसी भी जाति या समुदाय को सम्मिलित किए जाने के मुख्य पांच मानक निर्धारित किए थे। इनमें भौगोलिक एकाकीपन, विशिष्ट संस्कृति, आदिम जाति के लक्षण, पिछड़ापन और संकोची स्वभाव शामिल है। भारत में कुल 461 जनजातियाँ हैं जिनमें 424 अनुसूचित जनजाति के अंतर्गत है इन्हें सात क्षेत्र में बाँट सकते हैं।
1. उत्तरी क्षेत्र - इसके अंतर्गत जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश क्षेत्र की जनजाति है। इन जनजातियों में लाहुल, लेपचा, भोटिया, थारू, बुक्सा, जौनसारी, खम्पा, कनौटा है। इन सभी में मंगोल प्रजाति के लक्षण मिलते हैं। भोटिया अच्छे व्यापारी होते हैं एवं चीनी-तिब्बती परिवार की भाषा बोलते हैं।
2. पूर्वोत्तर क्षेत्र - असम, अरूणाचल, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय, मिजोरम की जनजातियाँ इनके अंतर्गत आते हैं। दार्जिलिंग व सिक्किम में लेपचा, अरूणाचल में अपतनी, मिरी, डफला व मिश्मी, असम-मणिपुर सीमावर्ती क्षेत्र में हमर जनजाति, नागालैंड व पूर्वी असम में नागा, मणिपुर, त्रिपुरा में कुकी, मिजोरम में लुशाई आदि जनजातियाँ आती है। अरूणाचल के तवांग में बौद्ध जनजातियां मोनपास, शेरदुकपेंस और खाम्पतीस रहती है। वर्तमान में चीन इस पर अपना दावा कर रहा है। नागा जनजाति उत्तर में कोनयाक, पूर्व में तंखुल, दक्षिण में कबुई, पश्चिम में रेंगमा व अंगामी एवं मध्य में लहोटा व फोम आदि उपजातियों में बंटी हुई है। मेघालय में गारो, खासी व जयंतिया जनजातियाँ मिलती है। पूर्वोत्तर क्षेत्र की सभी जनजातियों में मंगोलायड प्रजाति के लक्षण मिलते हैं। ये तिब्बती, बर्मी, श्यामी एवं चीनी परिवार की भाषा बोलती है। ये खाद्य संग्राहक, शिकारी, कृषक एवं बुनकर होते हैं।
3. पूर्वी क्षेत्र - इसके अंतर्गत झारखंड प. बंगाल, उड़ीसा व बिहार की जनजातियाँ आती हैं। जुआंग, खरिया, खोंड, भूमिज उड़ीसा की जनजातियाँ हैं। मुंडा, उरांव, संथाल, हो, बिरहोर झारखंड की जनजातियाँ हैं। प. बंगाल में मुख्यतः संथाल, मुंडा व उरांव जनजातियाँ मिलती है। ये सभी जनजातियाँ प्रोट्रो-आस्ट्रेलायड प्रजाति से संबंधित हैं। इनका रंग काला अथवा गहरा भूरा, सिर लंबा, चौड़ी-छोटी व दबी नाक व हल्के घुंघराले बाल होते हैं। ये ठ रक्त समूह के होते हैं। ये ऑस्ट्रिक भाषा परिवार के हैं तथा कोल व मुंडा भाषा बोलते हैं।
4. मध्य क्षेत्र - इसके अंतर्गत छत्तीसगढ़ व मध्यप्रदेश, पश्चिमी राजस्थान व उत्तरी आंध्रप्रदेश की जनजातियाँ आती हैं। छत्तीसगढ़ की प्रमुख जनजातियाँ गोंड, बैगा, मारिया, अबूझमारिया है। मध्य प्रदेश के मंडला जिला व छत्तीसगढ़ के बस्तर जिला में इनका सकेन्द्रण अधिक है। पूर्वी आंध्रप्रदेश में भी ये जनजातियाँ मिलती हैं। ये सभी जनजातियाँ प्रोट्रो-आस्ट्रेलायड से संबंधित हैं।
5. पश्चिमी भाग - इसके अंतर्गत गुजरात, राजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र की जनजातियाँ आती हैं। भील, गरासिया मीना, बंजारा, सांसी व सहारिया राजस्थान की, महादेव कोली, बाली व डब्ला गुजरात की एवं पश्चिमी मध्यप्रदेश की जयन्ति है। ये सभी जनजातियाँ प्रोट्रो-आस्ट्रेलायड प्रजाति की हैं। ये सभी आस्ट्रिक भाषा परिवार की बोलियाँ बोलती हैं।
6. दक्षिणी क्षेत्र - इसके अंतर्गत मध्य व दक्षिणी पश्चिमी घाट की जनजातियाँ आती हैं जो 200 उत्तरी अक्षांश से दक्षिण की ओर फैली हैं। पश्चिमी आंध्रप्रदेश, कनार्टक, पश्चिमी तमिलनाडु और केरल की जनजातियाँ इसके अंतर्गत आती हैं। नीलगिरि के क्षेत्र में टोडा, कोटा व बदागा सबसे महत्वपूर्ण जनजातियाँ है। टोडा जनजाति में बहुपति प्रथा प्रचलित है। कुरूम्बा, कादर, पनियण, चेचूँ, अल्लार, नायक, चेट्टी आदि जनजातियाँ दक्षिणी क्षेत्र की अन्य महत्वपूर्ण जनजातियाँ हैं। ये नीग्रिटो प्रजाति से संबंधित हैं। इनका ब्लड-ग्रुप । है। ये द्रविड़ भाषा परिवार में आते हैं।
7. द्वीपीय क्षेत्र - इसके अंतर्गत अंडमान-निकोबार एवं लक्षद्वीप समूहों की जनजातियाँ आती है। अंडमान-निकोबार की शोम्पेन, ओन्गे, जारवा व सेंटीनलीज महत्वपूर्ण जनजातियाँ हैं जो अब धीरे-धीरे विलुप्त हो रही है। ये नीग्रिटो प्रजाति से संबंधित है। मछली मारना, शिकार करना, कंदमूल संग्रह आदि इनका जीवनयापन का आधार है।

उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड की जनजातियाँ - यहाँ की प्रमुख जनजातियाँ भोटिया, थारू, बुक्सा, जौनसारी, राजी, शौका, खरवार और माहीगीर हैं। उत्तराखंड के नैनीताल में जनजातियों की संख्या सर्वाधिक है। उसके बाद देहरादून का स्थान आता है।
1. थारू - ये नैनीताल से लेकर गोरखपुर एवं तराई क्षेत्र में रहती है एवं किरात वंश की है। इनमें संयुक्त परिवार प्रथा है। कई परिवार ऐसे भी है जिनमें सदस्यों की संख्या पाँच सौ तक है।
2. बुक्सा - उत्तराखंड के नैनीताल, पौड़ी, गढ़वाल, देहरादून जिलों में ये पाए जाते है। इनका संबंध पतवार राजपूत घराने से माना जाता है। ये हिंदी भाषा बोलते हैं। हिन्दुओं की तरह इनमें भी अनुलोम व प्रतिलोम विवाह प्रचलित है।
3. राजी अथवा बनरौत - उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जनपद में पायी जानेवाली कोल-किरात जातियाँ हैं। ये हिन्दू हैं एवं झूमिंग प्रथा से कृषि करते हैं।
4. खरवार - उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले में निवास करनेवाली यह खूंखार व बलिष्ठ जनजाति है।

5. जौनसारी- ये उत्तराखंड के देहरादून, टेहरी-गढ़वाल, उत्तरकाशी क्षेत्र में मिलते हैं। ये भूमध्यसागरीय क्षेत्रों से संबंधित हैं। इनमें बहुपति विवाह प्रथा पाई जाती है।

6. भोटिया - उत्तराखंड के अल्मोढ़ा, चमोली, पिथौरागढ़ और उत्तरकाशी क्षेत्रों में पाए जानेवाली ये जनजाति मंगोल प्रजाति की है एवं ऋतु-प्रवास करती है।

मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ - गोंड, मुंडा, कोरकू, कोरबा, कोल, सहरिया, हल्वा, मारिया, बिरहोर, भूमियाँ, ओरांव, मीना आदि यहाँ की प्रमुख जनजातियाँ हैं। छत्तीसगढ़ का बस्तर जिला कुल जनजाति जनसंख्या की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। झाबुआ जिला जनजातीय जनसंख्या प्रतिशत के अनुसार सर्वोपरि है।

1. गोंड - भारत की जनजातियों में गोंड जनजाति सबसे बड़ी है। ये प्राक्-द्रविड़ प्रजाति की है। इनकी त्वचा का रंग काला, बाल काले, होंठ मोटे, नाक बड़ी व फैली हुई होती है। ये मुख्य: छत्तीसगढ़ के बस्तर, चांदा, दुर्ग जिलों में मिलती हैं। आंध्रप्रदेश व उड़ीसा में भी इनकी कुछ जनसंख्या है।

2. मारिया - मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ के छिंदवाड़ा, जबलपुर और बिलासपुर जिलों में रहनेवाली इस जनजाति की शरीर रचना गोंड जनजाति के समान है।

3. कोल - मध्य प्रदेश के रीवा सम्भाग और जबलपुर जिले में निवास करनेवाली इस जनजाति का मुख्य पेशा कृषि है।

4. कोरबा - छत्तीसगढ़ के बिलासपुर, सरगुजा और रायगढ़ जिले में निवास करनेवाली जनजाति है। झारखंड राज्य के पलामू जिले में भी ये मिलती है। ये मुख्यत: जंगली कंद-मूल एवं शिकार पर निर्भर हैं। कुछ कोरबा कृषक भी है। कोरबा जनजाति का मुख्य त्योहार करमा है। इनमें सर्प पूजा की प्रथा भी प्रचलित है।

5. सहरिया - मध्य प्रदेश के गुना, शिवपुरी व मुरैना जिलों में निवास करनेवाली ये जनजातियाँ कंदमूल व शहद संग्रह कर जीविका निर्वाह करते हैं।

6. हल्वा - छत्तीसगढ़ के रायपुर व बस्तर जिलों में निवास करनेवाली जनजाति। इनकी बोली में मराठी भाषा के शब्दों का अधिक प्रयोग होता है। ये लोग कृषक है।

7. कोरकु - यह भी मुंडा या कोलेरियन जनजाति की शाखा है एवं मध्य प्रदेश के निमाड़, होशंगाबाद, बैतूल, छिंदवाडा जिलों में निवास करती है। ये कृषक है।

राजस्थान की जनजातियाँ - राजस्थान के द.पू. व दक्षिणी क्षेत्र में यहाँ की अधिकांश जनजातीय आबादी निवास करती है। यहाँ की जनजातियों में भील, मीणा, सहरिया, गरासिया, डामोर, सांसी आदि प्रमुख हैं।

1. मीणा - राजस्थान में इस जनजाति की सर्वाधिक संख्या पाई जाती है। ये मुख्यत: जयपुर, सवाई माधोपुर, उदयपुर, अलवर, चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी व डूंगरपुर जिलों में रहते हैं। पौराणिक मान्यताओं के आधार पर इस जनजाति का संबंध भगवान मत्स्यावतार से है। मीणा जनजाति शिव व शक्ति के उपासक हैं।

2. भील - ये राजस्थान की द्वितीय प्रमुख जनजाति है एवं बाँसवाडा, डूंगरपुर, उदयपुर, सिरोही, चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा जिलों में निवास करती है। भील का अर्थ है धनुषधारी। ये स्वयं को महादेव की संतान मानती है। भील जनजाति प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड प्रजाति की हैं। इनका कद छोटा व मध्यम, आँखें लाल, बाल रूखे व जबड़ा कुछ बाहर निकला हुआ होता है। भीलों में संयुक्त परिवार प्रथा प्रचलित है। ये सामान्यत: कृषक है।

3. गरासिया - मीणा व भील के बाद राजस्थान की तीसरी प्रमुख जनजाति है। ये मुख्यत: दक्षिणी राजस्थान में रहते है। ये चौहान राजपूतों के वंशज है परंतु अब भीलों के समान आदिम प्रकार का जीवन व्यतीत करने लगे हैं। इनमें मोर बंधिया, पहरावना व ताणना तीन प्रकार के विवाह प्रचलित है।

4. सांसी - यह राजस्थान के भरतपुर जिले में रहनेवाली खानाबदोश जनजाति है। यह जनजाति स्वयं को बाल्मिकियों से भी नीचा मानती है।

झारखंड की जनजातियाँ - राँची, संथाल परगना व सिंहभूम जिलों में जनजातियों की संख्या सर्वाधिक है। देवघर, गिरिडीह, पलामू, गोड्डा, हजारीबाग, धनबाद आदि भी जनजातीय आबादी की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। झारखंड की जनजातियों में संथाल सबसे प्रमुख है। उरांव, मुंडा, हो, भूमिज, खड़िया, सौरिया पहाड़िया, बिरहोर, कोरबा, खोंड, खरवार, असुर, बैगा आदि अन्य प्रमुख जनजातियाँ हैं।

1. संथाल - यह भारत की एक प्रमुख जनजाति व झारखंड की सर्वप्रमुख जनजाति है। यह बंगाल, उड़ीसा व असम राज्यों में भी पाई जाती है। ये झारखंड में मुख्यत: संथाल परगना, रांची, सिंहभूम, हजारीबाग, धनबाद आदि जिलों में रहते हैं। संथाल आस्ट्रेलॉयड और द्रविड़ प्रजाति के होते हैं। ये 'मुंडा' भाषा बोलते हैं व प्रकृतिपूजक है। इनका मुख्य व्यवसाय आखेट, कंदमूल संग्रह व कृषि है। ब्राह्मण, सोहरई व सकरात इनके मुख्य पर्व है।

2. कोरबा - ये झारखंड के पलामू जिले में पाई जाती हैं। मध्य प्रदेश में भी ये निवास कर रहे हैं। यह जनजाति कोलेरियन जनजाति से संबंध रखती है।

3. उराँव - यह भी झारखंड की प्रमुख जनजातियों में है। इनका संबंध प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड प्रजाति से है। ये 'कुरूख' भाषा बोलते हैं जो मुंडा भाषा से मिलती जुलती है। ये मुख्यत: संथाल परगना व रोहतास जिलों में रहते हैं। शिकार, मछली मारना व कृषि इनका व्यवसाय है।

4. असुर - ये मुख्यत: सिंहभूम जिले में रहते हैं। ये भी प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड प्रजाति से संबंधित हैं। ये मुंडा वर्ग की 'मालेटा' भाषा बोलते हैं। लोहा गलाना, शिकार, मछली मारना, खाद्य संग्रह व कृषि इनका मुख्य व्यवसाय है।

5. सौरिया पहाड़िया - संथाल परगना, गोड्डा, राजमहल आदि जिलों में निवास करनेवाली ये कृषक जनजाति हैं।

6. पहाड़ी खड़िया - सिंहभूम जिले की पहाड़ियों में निवास करनेवाली यह जनजाति खाद्य संग्रह, बागवानी व कृषि पर निर्भर है।

7. खरवार - ये लड़ाकू व वीर जनजाति है तथा झारखंड के पलामू व हजारीबाग जिले में मिलती है।

8. मुंडा - ये भी झारखंड की प्रमुख जातियों में से है। इनकी अनेक उपजातियाँ है।

भारत की अन्य जनजातियाँ

1. नागा - ये नागालैंड, मणिपुर व अरूणाचल प्रदेश की जनजाति है एवं इंडो-मंगोलॉयड प्रजाति से संबंध रखती है। ये अधिकांशत: नग्नावस्था में घूमते हैं। कृषि, पशुपालन व मुर्गीपालन इनका मुख्य व्यवसाय है। ये झूमिंग कृषि करते हैं।

2. टोडा - ये तमिलनाडु की नीलगिरि व उटकमंडक पहाड़ियों में निवास करने वाली जनजाति है। इनका संबंध भूमध्यसागरीय प्रजाति से है। ये हृष्ट-पुष्ट, सुंदर व गोरी होती है। इनका मुख्य व्यवसाय पशुचारण है। टोडा जनजाति में बहुपति प्रथा प्रचलित है।

3. शोम्पेन, सेंटीनली, ओंगे व जारवा जनजाति अंडमान निकोबार की विलुप्त होती जा रही जनजातियाँ हैं। ये नीग्रिटो प्रजाति से संबंधित हैं।

भारत में जनजातीय क्षेत्रों की समस्या

1. भूमि पर अधिकारों में आती कमी- अंग्रेजों के आगमन के पूर्व भूमि पर उनका पूर्ण अधिकार था परंतु उनके आगमन व स्वतंत्रता के पश्चात् तथा वन कानूनों से भूमि पर उनका अधिकार छिनता चला गया जिनसे इनकी संस्कृति प्रभावित हुई।

2. विस्थापन की समस्या- विभिन्न विकास योजनाओं उद्योग धंधों के निर्माण के कारण से जनजातियों पर विपरीत असर पड़ा है एवं वे बड़ी संख्या में

विस्थापित होने को बाध्य हुए हैं।

3. गैर-आदिवासी जनसंख्या का प्रभाव- आदिवासी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ती गैर-आदिवासी जनसंख्या से उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति प्रभावित हुई है एवं उनमें जनांकिकी परिवर्तन हुए हैं। महाजनी शोषण बढ़ने से व कर्ज के जाल में फंस गए हैं, जिनकी काफी तीखी प्रतिक्रिया भी हुई है जिससे इस क्षेत्र में अशांति का वातावरण बना है। आदिवासी क्षेत्रों में उसका जनांकिकी संतुलन भी बिगड़ रहा है। 1961 ई. में झारखंड क्षेत्र में कुल आदिवासी जनसंख्या लगभग 50% था जो 1991 ई में 29% तक चला गया।

4. लिंग-आधारित समस्या- गैर आदिवासियों द्वारा सामाजिक-आर्थिक शोषण के कारण आदिवासी महिलाओं के शोषण की समस्या उभरी है।

5. सांस्कृतिक विलगाव- विस्थापन, जनांकिकी परिवर्तन, आदि के कारण सांस्कृतिक रूप से उनकी प्राकृतिक जीवन-शैली पर असर पड़ा है जिनसे ये जनजातियाँ प्रभावित हुई हैं।

6. शिक्षा संबंधी समस्या- निरक्षरता अभी भी है जिससे उनमें रूढ़िवादिता है। साक्षरता व शिक्षा के अभाव के कारण उनकी श्रम उत्पादकता का मूल्य कम है तथा वे महाजनी शोषण का भी शिकार हो जाते हैं।

समाधान

स्वतंत्रता के पश्चात् से ही आदिवासियों के विकास हेतु विभिन्न योजनाएँ बनाई जाती रही हैं परंतु पाँचवीं योजना में जनजातीय उप-योजना के आने के पश्चात् इस प्रक्रिया में तेजी आई है। इसके तहत समेकित जनजातीय विकास कार्यक्रम Integrated Tribal Development Programme (ITDP) के अंतर्गत 193 परियोजना चलाई जा रही है, जिससे 50% जनजातीय जनसंख्या लाभान्वित हो रही है। ये जिला व विकास प्रखंडों में चल रहे हैं। संशोधित क्षेत्र विकास अभिकरण Modified Area Development Agency (MADA) के अंतर्गत (249 परियोजनाएं) ऐसे केन्द्रों में चलाई जा रही है, जहाँ की अधिकतम जनसंख्या 10,000 तक हो एवं 50% से अधिक जनसंख्या जनजातीय हो। आदिम जनजातीय समूह के विकास के लिए 74 जनजातियों को पहचाना गया है एवं इनके लिए 14 राज्यों एवं केन्द्रशासित राज्यों में सूक्ष्म परियोजनाएं चलाई जा रही है।

जनजातीय उत्पादन के विपणन के लिए TRIFED (Tribal Federation) बनाया गया है जो कि उन्हें उनके उत्पादन का लाभप्रद मूल्य उपलब्ध करता है। स्थानीय संसाधनों के आधार पर जनजातियों के विकास को गरीबी निवारण कार्यक्रम व IRDP का अंग बनाया गया है। उनमें शिक्षा के विकास के साथ-साथ उन्हें महाजनी शोषण से बचाने का प्रयास किया जा रहा है एवं उनकी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने पर बल दिया जा रहा है। प्रस्तावित नई राष्ट्रीय जनजाति नीति नेहरूवियन एप्रोच पर आधारित है। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, पुनर्वास, भूमि-जुड़ाव पर जोर दिया गया है। जनजातीय भाषा का संरक्षण व लेखांकन, प्राथमिक स्तर पर उनको मातृभाषा में शिक्षा को प्रोत्साहन, संयुक्त वन प्रबंधन में जनजातीय भागीदारी को प्रोत्साहन देना शामिल है।

जनजातियों को सूचना का अधिकार प्रदान किया गया है ताकि वे ग्रामीण स्तर पर भूमि-दस्तावेजों से संबंधित सूचनाएं प्राप्त कर सकें। अनुसूचित जनजाति तथा वनवासी अधिकार विधेयक के अंतर्गत जनजातियों के भूमि संबंधी अधिकारों को बढ़ाया गया है। मध्य प्रदेश के अमरकंटक में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय खोला गया है, जो जनजातियों, से संबंधित विभिन्न अध्ययनों पर केन्द्रित होगा। इससे उनकी विशेषताओं के संबंध में जागरुकता बढ़ेगी एवं संवेदनशील प्रयासों के द्वारा उन्हें मुख्य धारा में लाना संभव होगा। जनसंख्या वृद्धि दर अत्यन्त निम्न रही।

भारत में नगरीकरण

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में नगरीकरण की विस्फोटक प्रवृत्ति रही है, जिसका मुख्य कारण ग्रामीण-नगरीय स्थानांतरण रहा है। यद्यपि अनेक नवीन नगर भी बसे हैं, जो अपने कार्यिक विशेषताओं के आधार पर आकर्षण का केन्द्र बने हैं। भारत में सबसे अधिक नगरीय वृद्धि (46%) 1971-81 के दशक में रही है। उसके बाद नगरीकरण की वृद्धि दर में क्रमिक रूप से कमी आई है। वर्तमान समय में इसकी वार्षिक वृद्धि दर लगभग 3% है जो नगरीकरण की प्रक्रिया के धीमी होने का संकेत है, परन्तु 3% की वार्षिक वृद्धि दर वस्तुतः नगरीय जनसंख्या विस्फोट को दर्शाता है।

भारतीय नगरों में मलिन बस्तियों की समस्या भी एक अत्यन्त गंभीर समस्या है। देश की नगरीय जनसंख्या का लगभग 33% एवं देश की कुल जनसंख्या का लगभग 8% मलिन बस्तियों में रहती है। मुम्बई का मलिन बस्ती क्षेत्र द. मुम्बई एशिया की सबसे बड़ी मलिन बस्ती (स्लम) है। कोलकाता में बड़ा बाजार के आसपास, चेन्नई में माउंट रोड के उत्तरी भागों में व पटना में सब्जी बाजार के पास मलिन बस्तियाँ मिलती है। ये मलिन बस्तियाँ सार्वजनिक स्थानों पर अस्थायी व गैर-कानूनी रूप से निर्मित होती है, इन्हें Squatter Sattlement और Pavement Sattlement कहते हैं। यहाँ रहनेवाली जनसंख्या को Floating Population भी कहते हैं क्योंकि सामान्य रूप से उनका निवास अस्थायी होता है।

स्लम में रहने वालों की संख्या में ग्रेटर मुम्बई का प्रथम स्थान है। उसके बाद क्रमशः मेरठ, नागपुर, कोलकाता व ठाणे का स्थान आता है। 2001 की जनगणना के अनुसार 6.18 करोड़ लोग देश के शहरी हिस्सों मे बनी मलिन बस्तियों रहते थे। भारत जैसे विकासशील देशों में ग्रामीण-नगरीय स्थानांतरण के कारण नगरीकरण की प्रक्रिया को अधिक बल मिला है। यहाँ के अधिकतर नगर पहले गाँव ही थे, जो सेवाओं के केन्द्रीकरण के कारण नगर बन गए। भारत जैसे विकासशील देशों में औद्योगीकरण व नगरीकरण का समानुपातिक संबंध स्वस्थ रूप में विकसित नहीं हुआ है क्योंकि दबाव डालने वाली शक्तियों (Push factor) के कारण ग्रामीण-नगरीय स्थानांतरण काफी तेजी स` बढ़ा है। नगरीय जनसंख्या वृद्धि दर नगरों के औद्योगिक विकास दर से अधिक तीव्र रहा है। परिणामतः नगर का अवरूद्ध व अनियोजित विकास हुआ है एवं इनसे विभिन्न तरह की नगरीय समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। वस्तुतः भारत के नगरों के विकास में भारत में नगरीकरण आकर्षक शक्तियों Pull factor की तुलना में Push factor ज्यादा प्रभावी रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न प्रकार की नगरीय समस्याएं जन्म ले रही हैं।

परिणाम

1. मलिन बस्तियों की समस्याएं: ये निम्न स्तरीय अस्थायी अधिवास होते हैं, जहाँ बुनियादी सेवाओं का अभाव होता है। सामान्यतः ये सरकारी खाली भूमि, रेल लाइनों के किनारे, सड़कों, नहरों के किनारे बसे होते हैं। इनमें वे लोग होते हैं जो कि ग्रामीण-नगरीय स्थानांतरण करते हैं। ये लोग अपने कार्य-स्थान के निकट रहना चाहते हैं, अतः पास ही अनुकूल परिस्थितियों में अस्थायी आवास बना लेते हैं। इन आवासों में प्रायः छोटे व्यवसायी, दिहाड़ी मजदूर रहते हैं। इनमें सामाजिक, सांस्कृतिक, जातीय विविधताएं भले ही हों, परंतु मुख्य कारक आर्थिक होता है, जो उन्हें एक जगह पर इकट्ठा कर देता है।

यद्यपि सरकारी और गैर-सरकारी प्रयासों द्वारा मलिन बस्तियों में रहने वालों को बेहतर वैकल्पिक आवासों की उपलब्धता सुनिश्चित कराने का प्रयास किया जा रहा है, किंतु कार्य-स्थान से दूर अवस्थित होने के कारण मलिन बस्तियों में रहने वाले लोग वहाँ रहने के लिए प्रोत्साहित नहीं हो पा रहे हैं। इससे मलिन बस्तियों का समाधान मुश्किल हो जाता है। अतः अब मलिन बस्तियों में ही बुनियादी सुधार के प्रयास किए जा रहे हैं। शहरी गरीबों की हालत सुधारने के लिए 'राजीव आवास योजना' का प्रावधान किया गया है। इसका उद्देश्य अगले पांच वर्षों